Reformation of the Drivers of India

&

Initiative taken by
Agarwal Packers & Movers Ltd.

APM DRIVER SEVA KENDRA

घर से दूर – घर जैसा

A Unit of
APM Highway Terminal Private Limited

श्री रमेश अग्रवाल (चेयरमैन - अग्रवाल मूवर्स ग्रुप) एवं श्री राजेन्द्र अग्रवाल (वाईस चेयरमैन - अग्रवाल मूवर्स ग्रुप) सह-परिवार महा महिम राष्ट्रपति श्रीमति प्रतिभा देवीसिंह पाटिल को "ए.पी.एम. ड्राईवर सेवा केन्द्र की पुस्तक" प्रदान कर उनसे विधिवत आशीर्वाद लेते हुऐ दिनांक 18 जुलाई 2012 को।

FACT TO BELIEVE

देश की GDP 4.8% Road Transport से आती है।
इसका पहला सिपाही एक "ट्रक ड्राईवर" है,
जो Economy को चलाता है।

क्या आपको मालुम है ?

- ड्राईवर **24** घंटे में केवल **2.30** घंटे ही आराम से सो पाते है और इसी कारण **540** व्यक्ति प्रतिदिन सड़क दुर्घटना में मारे जाते हैं।
- एक ट्रक ड्राईवर आम आदमी से **10** वर्ष पहले मरता है।
- देश के **38%** ड्राईवर अविवाहित ही रहते है।
- देश में प्रतिदिन **26%** गाड़ियाँ **(i.e 23 Lacs Vehicles)** बिना ड्राईवर के नहीं चल पाती।

Data Complied by :-
All India Transporters Welfare Association (AITWA)

APM DRIVER SEVA KENDRA

घर से दूर – घर जैसा

PROJECT REPORT

Land	:	50 Acre
Power (Electricity)	:	Normal 100 KV
Manpower	:	500 +
Construction	:	40,000 sq. ft.

Cost of Project

a.) Land	:	Rs. 7.50 Crores
b.) Construction + Road	:	Rs. 10.00 Crores
c.) Others	:	Rs. 10.00 Crores
Total Project Cost	:	Rs. 27.50 Crores

AGARWAL™ movers GROUP

AGARWAL PACKERS & MOVERS LTD.

PROJECT MISSION

Mr. Rajender Agarwal
Vice Chairman - Agarwal Movers Group

APM Driver Seva Kendra is conceptualized with a vision to create standardized and accessible stopovers where Truckers and crew members who move across the country can feel at home and rejuvenate themselves for their onward journey.

APM DRIVER SEVA KENDRA
घर से दूर – घर जैसा

BUSINESS OBJECTIVE

Transport Sector is the backbone of the Indian economy. Across the country, there is large base of national and state highways with 2 to 5 million long distance truck drivers and helpers on the move. These drivers are the real 'drivers' of our nations's economy and development. Agarwal Movers Group salutes their yeoman services in the development of the nation and dedicate **APM Driver Seva Kendra** to them.

The living and working conditions of these are neither organized nor healthy. The wayside amenities on the highways for the truckers are non-existent nor any government organization giving attention to this long standing demand of the transporters.

Agarwal Movers Group considers its Corporate Social Responsibility to address these matter and deeply pondered on this aspect. They have now come up with the concept of APM Driver Seva Kendra that shall provide decent amenities and various other services all under one roof.

As a first step towards this ambitious project we intend to purchase land at locations where its cost is reasonably cheap. To start with we have identified **Dudu, near Jaipur at NH-8.** It will be first of its kind Corporate Initiative to recognize the services of the real drives of country's economy.

Towards its Corporate Social Responsibility, Agarwal Movers Group endeavors to take the fruits of economic reforms right where the drivers are i.e. on the Highways. "We shall provide them an environment that will take away their stress and rejuvenate them for their onward journey. "APM Driver Seva Kendra" will be provided decent facilities at par with what are available in the cities and what they long for.

PROPOSED STRUCTURE FOR APM DRIVER SEVA KENDRA

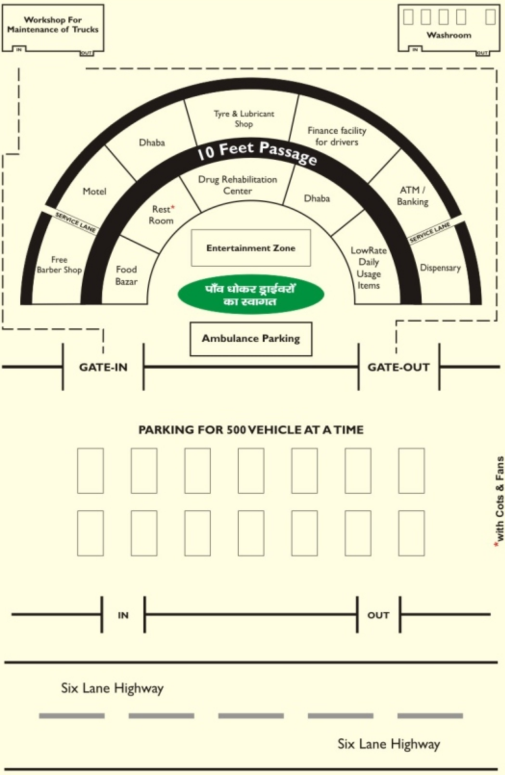

Services offered at "APM Driver Seva Kendra"

Warm Welcome of "Truck Drivers"

Free Services

- Paaon Dho-Kar Swagat
- Truck Terminal / Parking space
- Night Guard For Safety of Parked Vehicles
- Cemented Roads
- Free Shaving / Haircut
- Healthcare Facility : Dispensary with Doctors
- Free Health Check-Up for STI/ STD s & General Ailments
- HIV/ AIDS Awareness Camp & Condom Distribution
- Hygienic Bathing Facilities
- High Security Zone
- Wash Rooms
- Rest Rooms

Nominal Rates

- Hygienic Food
- Medical Shop

Phase - 2nd

- Workshop for Maintenance
- Tyre Shop
- Lubricant Shop
- Entertainment Zone
- Phone Facility
- Banking Facility
- ATMs
- Mobile /Cable/Internet Connection

Phase - 3rd

- Motels
- Hyper Market Offerings Household items like Clothes, FMCG Goods, Gifts, Toiletries, Electronic, Electrical Items etc.

आज समाज में ड्राईवर सबसे उपेक्षित क्यों?

भारत में कृषि के बाद वो व्यवसाय जिसने सबसे ज्यादा रोजगार दिया है, वह है **ट्रांसपोर्ट सेक्टर** सरकारी बजट में प्रतिवर्ष कृषि के सुधार पर तो बहुत कुछ हमेशा ही होता है, पर बजट में ट्रांसपोर्ट सेक्टर का भूले से भी नाम नहीं आता है। लगातार सरकारी उपेक्षा के कारण आज जो स्थान ट्रांसपोर्ट सेक्टर का होना चाहिए था, वह नहीं हुआ। कारणवश अन्य क्षेत्रों ने भी इस व्यवसाय को सम्मान नहीं दिया और इसे हमेशा हल्का कार्य ही माना गया है। शायद इसीलिये इस सेक्टर से जुड़े लोग भी उदासीन हो गए और 'जैसा चलता है चलने दो' की नीति को अपनाने के लिए मजबूर हो गए।

इन सबकी सजा मिली एक ट्रक ड्राईवर को। वह दिन-रात मेहनत करके भी अपने मालिकों की नजर में नहीं चढ़ सका।

समाज में ड्राईवर को आज भी हेय दृष्टि से देखा जाता है। परिणामस्वरूप धीरे-धीरे इस व्यवसाय में ड्राईवर आने बंद हो गए।

सरकारी सर्वेक्षणों से यह ज्ञात होता है कि आज एक आम भारतीय की औसत आयु 72 वर्ष है, जबकि चौंका देने वाली बात यह है कि यह औसत आयु एक चालक की मात्र 62 वर्ष ही है जो कि 10 वर्ष कम है। ये दस वर्ष एक चालक ने देश को कुर्बानी में दिए हैं, परन्तु इस बेचारे की इस कुर्बानी की कहीं कोई गिनती नहीं है। वह बेबस होकर सरकार और समाज की उपेक्षा के कारण अपना जीवन समय से पूर्व ही गंवा बैठता है। सारा जीवन अपने मालिकों का पालन करने के उपरान्त अन्त में उसके परिवार को इतना कुछ भी नहीं मिल पाता कि जिससे उनका गुजारा हो जाए। इसी वजह से आज कोई भी ड्राईवर बनकर राजी नहीं है। यह विधि की कैसी विडम्बना है कि 14 वर्ष मात्र वनवास में रहने से भगवान राम जगत पूज्य हो गए और इधर चालक 10 वर्ष पूर्व मौत को गले लगाकर भी किसी का दिल नहीं जीत पाता।

लम्बे रूट पर चलते समय कई बार वे दो-दो, तीन-तीन दिन तक स्नान तक नहीं कर पाते, हजामत बनवाने की तो सोचता ही रह जाता है। कोई परेशानी बीमारी इत्यादि के हालात में वह लाचार-सा खड़ा रह जाता है, उसे ये सब सुविधा हाईवे पर नहीं मिल पाती। ज्ञातव्य है कि हमें जरा-सा नजला-जुकाम हो जाए तो हम पूरा आराम करते हैं, परन्तु वह ट्रक ड्राईवर कहाँ जाए, किससे अपना दर्द बाँटे। उल्टे घर के हाल-चाल से दु:खी व्यक्ति अपना दर्द अपने घर पर भी नहीं कह पाता। कल्पना कीजिए, जो व्यक्ति दूसरों को सुख-सुविधा देने का कार्य करता हो, वह अपने मन की पीड़ा को किसी को कह भी नहीं पाता, यह कैसा विधाता का विधान है।

❖ ❖ ❖

सौतेला व्यवहार

घर से, माँ-बाप से व बीवी-बच्चों से दूर रहकर, हर वक्त सर्दी-गर्मी व बरसात आदि के दु:ख झेलते हुए देश के लिए महत्वपूर्ण कार्य करने के बावजूद भी समाज में एक ड्राईवर की अवहेलना होना गले से नहीं उतरता। इतना कुछ सहकर देश-सेवा करने वालों के लिए तो मन से आदर-सत्कार की भावना होनी चाहिए थी। फिर इस अनादर के पीछे क्या कारण हो सकता है? गहन विचार करने पर लगता है कि एक बेचारा ड्राईवर हमारे कारण बेइज्जत जीवन बिताता है। जिस कार्य के लिए हम उसे सामान देकर सड़क पर उतार देते हैं, लेकिन उसे रास्ते भर क्या-क्या परेशानियाँ होंगी, इसके बारे में ना सोचना ही उसके दु:खों का कारण है। एक ड्राईवर जब ट्रक लेकर निकल पड़ता है तो वह रास्ते भर की दिक्कतों से घबराकर वापस ना लौटकर एक वीर योद्धा के समान रण में पीठ न दिखाकर, सब प्रकार के संकटों पर विजय पाकर अपना कार्य पूर्ण करता है। पर दुर्भाग्य से उसे पुरस्कृत तो नहीं किया जाता, अपितु किसी न किसी बात पर अपमानित ही किया जाता है। शायद इस तरह के व्यवहार के कारण ही उसे समाज में वाञ्छित इज्जत नहीं मिल पाती है।

एक ड्राईवर के बीवी-बच्चे भी लाचारी वाला जीवन जीते हैं। उन्हें भी समाज में निम्न दृष्टि से देखा जाता है। प्राय: देखा गया है कि स्कूलों में भी उनके बच्चों की बात-बात पर हँसी उड़ाई जाती है। बच्चे बचपन से ही सामाजिक कुंठा के शिकार हो जाते हैं, कारणवश उन्हें ड्राईवरी के धन्धे से ही नफरत हो जाती है। दूसरी ओर, एक ड्राईवर की पत्नी भी समाज में वो जगह नहीं पाती, जिसकी वह अधिकारी होती है। समाज में अन्य स्त्रियों के मुकाबले वह दयनीय स्थिति में होती है। आज भी कितनी ही लड़कियाँ ड्राईवर से शादी करने से मना कर देती हैं। एक ड्राईवर का पिता भी कभी सीना ठोक कर यही नहीं कहता कि मेरा लड़का ट्रक ड्राईवर है। वह तो हमेशा उदासीन होकर हमेशा अपने उस पुत्र के लिए चिंतित रहता है।

इन सब कारणों से ही एक मेहनती ड्राईवर समाज के साथ-साथ परिवार में भी इज्जत नहीं प्राप्त कर पाता। सामाजिक उपेक्षा के चलते ड्राईवर के पूरे परिवार का मनोबल भी गिरा रहता है। प्राय: किसी भी महत्वपूर्ण और बड़े त्यौहारों पर वह कभी घर पर नहीं होता। जब तक एक ड्राईवर को उसके त्याग और मेहनत का पूरी प्रतिफल नहीं मिलेगा, तब तक देश का **ट्रांसपोर्ट सेक्टर** ढंग से उन्नति नहीं कर सकता।

❖ ❖ ❖

ड्राइवरों का शोषण

देशवासियों की आवश्यकताऐं दिन-प्रतिदिन सम्पन्नता के कारण बढ़ती जा रही है। कुछ समस्याएँ वो हैं जो चालक को सरकारी व सामाजिक उपेक्षा के कारण होती हैं। अब वे समस्याएँ, जिन्हें एक चालक को दिन-रात, सोते-जागते, उठते-बैठते, खाते-पीते सहन करनी पड़ती हैं। सामान जल्दी पहुँचाने के सबब में वह ना तो चैन से सो पाता है और ना ही कुछ ढंग से खा पाता है। जगह-जगह हाईवे पर होने वाली विभिन्न प्रकार की परेशानी इत्यादि के कारण उसका सड़क पर खुलेआम शोषण होता है। सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि एक चालक के साथ आम जनता की सहानुभूति भी नहीं है। सड़क पर कोई दुर्घटना हो जाने पर, चाहे गलती किसी की भी हो, आम जनता ट्रक ड्राईवर को ही दोषी मानकर गाली देती है, जबकि प्राय: यह देखा गया है कि हाईवे पर एक ट्रक ड्राईवर निर्धारित गति सीमा पर अपनी लेन में चलता है और हाई-फाई स्पीड वाले ही लगातार ओवरटेक करके ट्रक ड्राईवर को बाधा पहुँचाते हैं, पर इस मर्म को कोई जानने की कोशिश नहीं करता।

हाईवे पर एक खाकी वर्दी वाला, जिसको सही मायने में उसका पड़ोसी 30 रुपये का सामान भी उधार नहीं देगा। एक ट्रक ड्राईवर जो 25 लाख का ट्रक और 25 लाख का सामान लादकर कुल 50 लाख की प्रोपर्टी अपनी सुपुर्दगी में रखकर चल रहा है, उसको वो खाकी वर्दी वाला गला पकड़कर गाड़ी से नीचे उतार देता है तो मानो ऐसा लगता है जैसे कोई भूकम्प आ गया, मगर चालक क्या करे क्योंकि उस समय वह खाकी वर्दी वाला सरकार का रूप है। एक साधारण सिपाही का आज चाहे कहीं रौब चलता हो या नहीं, पर एक ट्रक ड्राईवर के लिए तो वह एक हौवा ही है। जहाँ चाहे ट्रक रूकवाकर बिना बात खर्चे-पानी के पैसे झटक लेता है।

आज के आधुनिक समाज में डॉक्टर का लड़का बड़ी शान से डॉक्टर बन जाता है। इंजीनियर का लड़का इंजीनियर और व्यापारी का व्यापारी। क्या आज कहीं यह सुनने में आ रहा है कि एक ड्राईवर का लड़का भी ड्राईवर बन रहा है? यह प्रश्नवाचक चिन्ह आज देश के सामने एक बहुत बड़ा सवाल लिए खड़ा है कि आगामी समय में देश का क्या होगा? कौन ट्रक चलाएगा? क्या रोबोट इस कार्य को कर सकेंगे? क्या विदेशी सहायता (एफ.डी.आई.) से यह सम्भव हो पाएगा ?

अग्रवाल मूवर्स ग्रुप द्वारा ड्राईवरों के रहन-सहन एवं उनके जीवन पर एक सर्वेक्षण किया गया जिसकी कुछ झलकियां आपको दिखाई जा रही है। -

ड्राईवरों के जीवन की कहानी ।
छाया चित्रों की जुबानी ।।

एक सर्वेक्षण में यह पाया गया है कि सन् 1982 में प्रति 1000 ट्रक के पीछे 1300 ड्राईवर होते थे, 1992 में प्रति 1000 ट्रक के पीछे 1000 ड्राईवर थे और 2002 में प्रति 1000 ट्रक के पीछे 890 ड्राईवर थे, वे अब घटकर सन् 2012 में प्रति 1000 ट्रक पर मात्र 750 ही रह गए हैं, यानि देश के कुल ट्रकों का लगभग 25% भाग सड़क पर ही चालकों के अभाव में खड़ा है। अनुमान है कि 2022 में 1000 ट्रकों पर केवल 480 ट्रक ड्राईवर ही मिल पायेंगें। अब बताइये, भारत की व्यवस्था कैसे आगे बढ़ेगी? रेल द्वारा सामान एक राज्य से दूसरे राज्य में और एक नगर से दूसरे नगर में तो लाया जा सकता है परन्तु किसी शहर के प्रमुख बाजारों में नहीं। ये काम तो मात्र ट्रकों द्वारा ही हो सकता है। ट्रक-चालक के अभाव में सामान स्टेशनों, गोदामों, बन्दरगाहों और एयरपोर्ट पर ही पड़ा रह जाएगा। खाद्य सामग्री होते हुए भी भुखमरी फैली रहेगी। ऐसी स्थिति दिन-प्रतिदिन और भी भयावह होती जाएगी।

ट्रकों के अनुपात में ड्राईवरों की कम होती संख्या भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए खतरे की घंटी है। वाहन निर्माता कम्पनियों को मजबूरन अपना उत्पादन कम करना पड़ेगा, इससे बेरोजगारी बढ़ेगी, कम्पनी घाटे में जायेगी। आवश्यक सामान की आवाजाही कम और महंगी होगी, इससे हर चीज पर महँगाई की मार पड़ेगी। हाईवे पर चलने वाले सारे ढाबे, दुकानें इत्यादि ट्रक-ड्राईवर से ही चलते हैं, उनको भी इसका फर्क पड़ेगा। ड्राईवर का कम होना देश को नीचे ले जाने का कारण बनेगा।

ड्राईवर्स का कम होना कन्या भ्रूण हत्या के बराबर है- जिस प्रकार लड़कों के अनुपात में लड़कियों का प्रति हजार प्रतिशत लगातार गिरना समाज के लिए कलंक है, उसी प्रकार प्रति ट्रक चालकों का औसत गिरना देश की अर्थव्यवस्था के लिए घातक है। लड़के-लड़की के बिगड़ते अनुपात को भ्रूण-हत्या रोककर ठीक किया जा सकता है, परन्तु ड्राईवर-ट्रक अनुपात के लिए क्या किया जाए? यह सवाल सिर उठाए खड़ा है। इसका एक ही और केवल एक ही रास्ता है, वह है ड्राईवर को समाज में इज्जत की नजर से देखा जाना। जिस दिन एक ट्रक ड्राईवर सीना ठोक कर यह कहे कि मुझे गर्व है कि मैं एक ट्रक ड्राईवर हूँ, समझो ट्रक-चालक अनुपात सुधरना चालू हो गया जायेगा।

सरकार, समाज, ट्रांसपोर्टर्स के शोषण के कारण (उसके हित को अनदेखा करने के कारण) एक ड्राईवर समय से पूर्व अपनी जीवन-लीला खत्म करने को मजबूर है, क्योंकि वह सुविधाओं के अभाव और जन-आक्रोश के कारण समय से पूर्व ही भ्रूण-हत्या के समान अपनी आहुति दे देता है।

यदि समय रहते सरकार और समाज अभी भी नहीं जागा तो एक दिन यह देश इसी कारण डूब जाएगा।

❖ ❖ ❖

ड्राईवर अर्थव्यवस्था का सतत सेनानी है

यह तो सभी जानते हैं कि पूरा भारतवर्ष और हम भारतीय सैनिकों के होते हुऐ पूर्णरूपेण सुरक्षित हैं। सेनाएँ सीमा पर दिन-रात चौकसी करती हैं, तभी हम चैन से सो पाते हैं। जब सीमाओं पर शांति रहती है तो सेना का काम कुछ आसान हो जाता है। दूसरी ओर, ट्रक ड्राईवर है जो सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाता है और दिन-रात लगातार काम करता है। चाहे देश में शांति हो या उपद्रव, उसे तो बस चलना ही है, बल्कि परेशानी के दिनों में उसका कार्यक्षेत्र और भी बढ़ जाता है। हमारे द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला प्रत्येक सामान इन्हीं के द्वारा ढोया जाता है। इसलिये यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि एक ड्राईवर हमारी अर्थव्यवस्था का सतत सेनानी है।

यह सब होते हुए भी ड्राईवर की कीमत कोई नहीं जानता, उसे हर स्थान पर दुत्कारा जाता है, अगर दुर्भाग्यवश वह दुर्घटना का शिकार हो जाता है तो उसके साथ किसी की भी हमदर्दी नहीं होती, उल्टे उसी पर दोषारोपण होता है। पूरे हाईवे पर हर कोई किसी न किसी रूप में ड्राईवर को लूटता है, उसकी मजबूरी का फायदा उठाता है। कोई सोच कर तो देखें कि एक ड्राईवर दुर्गम स्थानों पर जो सामान पहुँचाता है, क्या वह उसका अपना है? दूसरी ओर, अगर किसी सैनिक के साथ कोई दुर्घटना या अनहोनी घटना हो जाती है तो वह शहीद कहलाता है, अखबारों में उसकी चर्चा होती है, उसे सहानुभूमि मिलती है, इत्यादि-इत्यादि।

ड्राईवर और सैनिक दोनों ही देश को संभालते हैं। एक सीमाओं की रक्षा करता है तो दूसरा सीमा के अन्दर की जीवन रेखा को सुचारू रूप से चलाने में सहायक होता है। सुबह हमें जागने से पहले ही ब्रेड-मक्खन-दूध-अख़बार चाहिये होता है, बताइये यह आप तक कैसे पहुँचता है? अत: अब समय आ गया है सैनिक और ड्राईवर को बराबर का महत्व और सम्मान दिया जाये, अन्यथा देश बाहर से तो सुरक्षित रह जाएगा, परन्तु अन्दर ही अन्दर से खोखला हो जायेगा। वास्तव में, एक ड्राईवर देश की रक्तवाहिनियों में चलने वाले खून के समान है, यदि यह खून रूक गया तो यह देश कितने दिन चलेगा?

❖ ❖ ❖

टाटा / अशोक इसलिये जाने जाते है,
क्योंकि चालक इनका पहला सिपाही है।

ड्राइवरों के लिए आशा की किरण

यह सृष्टि-चक्र लेन-देन पर ही टिका हुआ है। इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में कोई किसी रूप में दे रहा है तो कोई किसी और रूप में ले रहा है। प्रकृति के इसी लेन-देन के घटनाक्रम के कारण ही हमारी यह पृथ्वी संतुलित होकर अपनी धुरी पर घूमती हुई सूर्य की परिक्रमा कर रही है। आप किसी भी रूप में इस बात की कल्पना करके देखो, यदि आपके पास कहीं से रोज हजारों बोरी अनाज आना चालू हो जाए और आप उसको आगे कहीं ना दें तो अंदाजा लगाईये, क्या आप उस अनाज को रोक सकते हैं? जब हम लगातार अपनी लेने की प्रवृत्ति बना लेते हैं तो प्रकृति अपने हिसाब से लेना भी जानती है, इस बात से हम सब भली-भाँति परिचित हैं। हमारे शास्त्रों ने तो यहाँ तक कह डाला है कि जो देता है वह देवता है और जो रखता (अर्थात् जो लेता है) वह राक्षस है, यह बात सही है।

शुरू में सबके साथ ऐसा होता है कि अपने आपको व्यापार इत्यादि में स्थापित करने के लिए रखना पड़ता है, परन्तु जब वह रखने वाला एक दिन पूर्णतया अपने पाँवों पर खड़ा हो जाता है तो उसका कर्त्तव्य बनता है कि अब वो भी किसी को कुछ गुरु दक्षिणा के रूप में दे। **'ड्राईवर सेवा केन्द्र'** के आरम्भ करने के पीछे रमेश जी की मंशा भी किसी-न-किसी रूप में उस इंडस्ट्री के लिए कुछ करने की थी, जिसके कारण आज वे इतने ऊँचे और सम्मानित स्थान पर जा पहुँचे हैं।

हमारी सनातन धर्म परम्परा रही है कि किसी से कुछ सीखो या पाओ तो उसे किसी अन्य रूप में सही समय आने पर अवश्य कुछ दो। इसी आधार पर गुरु अपने शिष्य से कुछ दक्षिणा की आस करता है, जैसे गुरु विरजानन्द जी ने अपने शिष्य स्वामी दयानन्द जी से दक्षिणा-रूप में यही माँगा कि समाज में व्याप्त अन्धविश्वासों और रूढ़िवादिता को तोड़कर समाज-सुधार का कार्य करो। गुरु रामकृष्ण परमहंस ने अपने अद्वितीय शिष्य विवेकानन्द से यही दक्षिणा माँगी कि सारे संसार में भारतीय आध्यात्मिक ज्ञान का डंका बजाओ। इसी आधार पर ट्रांसपोर्ट सेक्टर को दक्षिणा रूप में कुछ ऐसा दिया जाए कि यह सेक्टर भविष्य में खूब तरक्की भी करे और ड्राईवरों को भरपूर सुख-सुविधा भी मिले, जिसमें अग्रवाल मूवर्स ग्रुप मुफ्त में लगभग सभी सुविधाएँ उपलब्ध करायेगा।

रमेश जी को 25 वर्ष पूर्व भारतीय सेना की नौकरी छोड़कर (वहाँ से प्राप्त धन का आधा भाग सैनिक विधवा योजना को दान दिया) परिस्थितिवश ट्रांसपोर्ट व्यवसाय में कदम रखना पड़ा क्योंकि सेना में रमेश जी के एक शीर्ष अधिकारी स्क्वाड्रन लीडर श्री सुभाष गुप्ता डुडीगल ने उन्हें अपने घरेलू सामान को हैदराबाद से बालासोर (उड़ीसा) ले जाने के लिए जिम्मेदारी रमेश जी को सौंप दी, कारणवश रमेश जी को अग्रवाल पैकर्स एंड मूवर्स की स्थापना करनी पड़ी।

❖ ❖ ❖

मैने ड्राईवर के जीवन को समझा और

शपथ*ली की मैं

ड्राईवरो के लिये कुछ न कुछ जरूर करूँगा

8th May, 2007

श्री रमेश अग्रवाल
चेयरमैन एण्ड मैनेजिंग वर्कर, अग्रवाल मूवर्स ग्रुप

शुरू में जब अग्रवाल पैकर्स एंड मूवर्स की स्थापना हुई थी, तब ड्राईवरों से हिसाब-किताब करने के समय एक हल्की-सी नोंक-झोंक बनी रहती थी, जैसे गाड़ी दो दिन देर से क्यों पहुँची? डीजल इतना क्यों लग गया? या गाड़ी से सामान कैसे चोरी हो गया? इत्यादि, एक लम्बी सूची थी जिस पर हमेशा ही वाद-विवाद होता रहता था। सब की सोच यही होती थी, यह सब ड्राईवर ने जानबूझकर किया है। ड्राईवर की परेशानी को कोई नहीं देखता था, उल्टे उस पर सभी प्रकार का दोषारोपण होता था। ड्राईवर बेचारे की गलती न होते हुए भी उसे एक दोषी के रूप में देखा जाता था।

श्री राजेन्द्र अग्रवाल जी
वाईस चेयरमैन–अग्रवाल मूवर्स ग्रुप

इसे प्रभु की प्रेरणा कहा जाए या राजेन्द्र जी के बचपन के अच्छे संस्कार कि, उन्होंने विचार किया कि हम सब इकतरफा ड्राईवर को झूठा समझकर उसे दुत्कार देते हैं, कहीं ऐसा न हो कि ड्राईवर सही हो और हम पाप के भागीदार बनते रहे हों। यह सब सोचकर राजेन्द्र जी ने कमर्शियल ड्राईवर का लाइसेंस बनवाकर देश के विभिन्न हाईवे पर 10 ट्रिप लगाकर, ड्राईवरों के जीवन को नजदीक से झाँक कर देखा और उनके दु:ख-दर्द को समझकर बहुत व्यथित हुए कि जिसके बल पर हमारी ट्रांसपोर्ट कम्पनी चल रही है, वही व्यक्ति सबसे ज्यादा परेशान और बेहाल है। राजेन्द्र जी का यही अनुभव **'ड्राईवर सेवा केन्द्र'** की परिकल्पना लेकर आगे बढ़ा।

राजेन्द्र जी ने अनुभव किया कि चाहे कैसा मौसम हो, हालात हो, ड्राईवर को कहीं कोई चैन नहीं है, उसे बस सब ओर से गाली ही तोहफे में मिलती हैं। उनके इसी अनुभव के कारण अग्रवाल पैकर्स एंड मूवर्स में शुरू से ही ड्राईवरों को समुचित इज्जत दी जाती है और दूसरी सभी कम्पनियों में कार्यरत ड्राईवर भी इज्जत और सुविधा पाएँ, यह सोच राजेन्द्र जी के जेहन में हमेशा बनी रहती थी और यही सोच अब 'ड्राईवर सेवा केन्द्र' के रूप में उभरकर सामने आई है। इसी सोच को लेकर आगे बढ़े श्री रमेश जी ने एटवा का

OATH

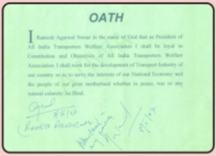

OATH

I, Ramesh Agarwal Swear in the name of God that as President of All India Transporters Welfare Association I shall be loyal to Constitution and Objectives of All India Transporters Welfare Association. I shall work for the development of Transport Industry of our country so as to serve the interests of our National Economy and the people of our great motherland whether in peace, war or any natural calamity Jai Hind.

Sh. Ramesh Agarwal, Chairman & Managing Worker of Agarwal Movers Group taking Oath from Hon'ble Chief Justice of India Mr. Justice Y.K. Sabharwal as National President of All India Transporters Welfare Association (AITWA) on 08th May 2007

नेशनल प्रेसीडेंट बनते समय जब भारत के चीफ जस्टिस श्री वाई.के. सब्बरवाल से मई 2007 में शपथ ग्रहण किया था तो इस तरह के केन्द्र को बनाने का संकल्प लिया था।

इस प्रकार रमेश जी और राजेन्द्र जी ने इस केन्द्र के माध्यम से देश और समाज की सेवा का जो बीड़ा उठाया है, उसके आने वाले समय में बड़े ही चमत्कृत परिणाम प्राप्त होने वाले हैं। यह देश की वर्तमान अर्थव्यवस्था के लिए एक क्रांतिकारी कदम साबित होगा।

राजेन्द्र जी का उस समय शिक्षा में किये गये त्याग से देश उन्नत होगा और राजेन्द्र जी को इसका प्रणेता कहा जाएगा, वे इसके सही हकदार भी हैं।

❖ ❖ ❖

ड्राईवर सेवा केन्द्र की सुविधाएँ

यह केन्द्र हाईवे पर लगभग 50 एकड़ में फैला हुआ है और इसमें 7 इमारतें बनी हुई हैं। इस केन्द्र पर ड्राईवरों के सोने के लिए 500 चारपाइयों का इंतजाम किया गया है, जिन पर वे इच्छानुसार अपनी सफर की थकान मिटाकर निश्चिंत होकर 6 घण्टे नींद पूरी कर सकेंगे। अग्रवाल मूवर्स ग्रुप की ओर से 10 नाई नियमित रूप से वहाँ होंगे, जो फ्री में ड्राइवरों की शेव व हजामत बनाएंगे। इसके अलावा फ्री में बड़े स्नानघर व शौचालयों का उचित प्रबंध किया गया है। ड्राईवरों के ट्रकों को छायादार शेड के नीचे खड़ा करने का भी उचित प्रबंध किया गया है। प्राय: ढाबे वाले ट्रक-ड्राईवरों को औने-पौने भाव पर खराब व बासी खाना परोस देते हैं, जिस कारण वे बीमार पड़ जाते हैं, अत: इस केन्द्र पर जीरो मार्जिन पर ड्राईवर को स्वच्छ एवं स्वादिष्ट खाना उपलब्ध कराया गया है। साथ ही, एक दाम और कम मूल्य वाला एक मिनी स्टोर भी खोला गया है, जहाँ पर उसे रोज के इस्तेमाल की लगभग सभी वस्तुएँ आसानी से मिल सकेंगी। इस केन्द्र में छोटी-मोटी रिपेयर की शॉप का भी इंतजाम किया गया है।

हाईवे पर जब ड्राईवर खाना खाने व कुछ आराम करने के लिए जब किसी ढाबे में रूकते हैं, तो वे ढंग से इसलिए नहीं सो पाते थे कि कहीं उनका ट्रक से डीजल व सामान चोरी ना हो जाए। इसी कारण बिना नींद पूरी किए ही वह आगे सफर पर निकल पड़ता है, कारणवश अधिक दुर्घटनाएँ होती हैं, परन्तु इस केन्द्र पर ड्राईवर निश्चिंत होकर थकान मिटाता व सोता है क्योंकि उसे मालूम है कि मेरा ट्रक सुरक्षित स्थिति में खड़ा है क्योंकि इसमें ट्रकों की सुरक्षा के लिए सिक्योरिटी गार्ड तैनात किये गये हैं।

इस केन्द्र पर आधुनिक सुविधाओं से युक्त एक एम्बुलेंस गाड़ी हमेशा तैयार मिलेगी तथा छोटी-मोटी बीमारी का नि:शुल्क इलाज भी किया जायेगा। ड्राईवरों के मनोरंजन हेतु वीडियो से उन्हें ज्ञानवर्धक फिल्में दिखाने का भी इंतजाम किया गया है।

नशा मुक्ति– प्राय: घर से बाहर रहने के कारण ड्राईवर में कुछ गलत आदतें पड़ जाती हैं क्योंकि कोई रोक-टोक करने वाला तो पास में होता नहीं है, इसलिए उसे शराब, ड्रग्स इत्यादि व्यसन लग जाते हैं, जो उसका जीवन भर पीछा नहीं छोड़ते। इसी समस्या को मद्देनजर रखते हुए इस चर्चित ड्राईवर सेवा केन्द्र में ड्राईवरों की नशा-मुक्ति के लिए विशेष अभियान चलाया गया है, वहाँ उन्हें डॉक्युमेंटरी फिल्मों के माध्यम से समझाया जाएगा कि किस तरह उसके परिवार को बाद में उसकी आदतों के कारण जिल्लतें उठानी पड़ेंगी। आशा है यह 'ड्राईवर सेवा केन्द्र' भविष्य में ड्राईवरों का तीर्थ-स्थल कहलायेगा।

❖ ❖ ❖

ड्राईवर सेवा केन्द्र की कुछ झलकियाँ

ड्राईवर सेवा केन्द्र का मुख्य द्वार

ड्राईवर सेवा केन्द्र में ट्रकों का पार्किंग स्थल

ड्राईवर सेवा केन्द्र में विश्राम करते हुऐ ट्रक ड्राईवर्स

ड्राईवर सेवा केन्द्र में ड्राईवरों के लिये निःशुल्क चिकित्सा परामर्श

ड्राईवर सेवा केन्द्र के पदाधिकारी वृक्षारोपण करते हुऐ।

ड्राईवर सेवा केन्द्र में ड्राईवर्स वृक्षारोपण करते हुऐ।

ड्राईवर के पावँ धोकर उनका आगमन करते हुऐ।

ड्राईवर की फ्री शेविंग करते हुऐ ।

समाज/देश को इस केन्द्र से लाभ

रमेश जी ने गहन सोच-विचार करके अपनी ओर से पहल कर 'ड्राईवर सेवा केन्द्र' का एक प्रारूप तैयार किया। एक ऐसा स्थान जो चालक का घर न होते हुए भी घर जैसा सुख व आनन्द दे और उसमें उसे सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं के साथ-साथ एक अपनेपन का भी एहसास हो। इसी विचारधारा के अन्तर्गत 7 सितम्बर 2012 को जयपुर-किशनगढ़ हाईवे (एन.एच.-8), जिस पर प्रतिदिन 23,000 भारी वाहनों का आवागमन होता है, पर एक विशाल 'ड्राईवर सेवा केन्द्र' का विधिवत उद्घाटन होने जा रहा है। इसमें सभी आवश्यक मूलभूत सुविधाओं के साथ-साथ ड्राईवर को मान-सम्मान देने के लिए एक अनोखा प्रयोग शुरू किया जायेगा, जिसमें आने वाले सभी ड्राईवरों का जल के द्वारा पाँव धोकर विधिवत सत्कार किया जाएगा। यही वो सम्मान है जिससे कोई भी चालक गौरवान्वित होगा। ये सब बातें जब ड्राईवर चर्चा के दौरान अपने घर पर बताएगा तो उसके घर वाले भी फूले न समायेंगे।

भविष्य में रमेश जी के इस अद्‌भुत प्रयोग के द्वारा भारत की वर्तमान अर्थव्यवस्था के लिए बहुत ही सुखद परिणाम सामने आएंगे, जिस पर आने वाली पीढ़ियाँ नाज करेंगी। अगर यह प्रयोग सफल हो गया और सभी बड़ी वाहन निर्माता कम्पनियों एवं सभी बड़े ट्रांसपोर्ट द्वारा इसे अपना लिया गया तो वह दिन दूर नहीं जब भारत का नौजवान पढ़-लिखकर सिर उठाकर यह कह सकेगा कि मैं इस कम्पनी का कमर्शियल ड्राईवर हूँ और समाज में मुझे समुचित स्थान प्राप्त है।

जिस तरह जलवायु ही जीवन का आधार होती है, उसी प्रकार जहाँ ट्रक और ड्राईवर ठहरना या रूकना शुरू कर देते हैं, वह स्थान धीरे-धीरे 'लॉजिस्टिक पार्क' का रूप ले लेता है। एक लॉजिस्टिक पार्क में मुख्यत: सामान का उतारना-चढ़ाना, स्टोरेज, ट्रांसशिपमेंट सेन्टर, स्थानीय टैक्सों का लेन-देन, ट्रकों की रिपेयर के लिये वर्कशॉप, ऑटोमोबाइल कम्पनियों के शोरूम, पुराने वाहनों की सेल-परचेज और उनका बैंक द्वारा वित्तीय लोन की सभी सुविधाएँ होती हैं। ऐसे पार्क में ड्राइवर ट्रेनिंग स्कूल के द्वारा असंख्य लोगों को ड्राइविंग भी सिखाई जाती है। कुल मिलाकर एक लॉजिस्टिक पार्क लगभग 5000 लोगों को रोजगार देने में सक्षम होता है। इन पार्कों के अस्तित्व में आने पर राज्य सरकारों को करोड़ों-अरबों रुपयों का निवेश प्राप्त होता है।

❖ ❖ ❖

गाड़ी Manufacturing करना आसान है,
मगर इसको चलाना बहुत मुश्किल है।

ए.पी.एम. ड्राईवर सेवा केन्द्र में ड्राईवरों का सम्मान

ड्राईवरों के पाँव धोकर उनका आगमन करते हुऐ।
श्री राजेन्द्र अग्रवाल
(वाईस चेयरमैन-अग्रवाल मूवर्स ग्रुप)

भारतीय संस्कृति में प्रत्येक जीव मात्रा के प्रति दयाभाव को महत्व दिया गया है। परन्तु इतना सब होते हुऐ भी ना जाने इस सांस्कृतिक परम्परा से एक ट्रक ड्राईवर अछूता रह गया। सब जानते है कि एक ड्राईवर के साथ किसी की भी सहानुभूति नहीं होती, इसी कारण उसके द्वारा किए जा रहे राष्ट्रीय महत्व के कार्य की किसी को भी कदर नही है । वास्तव में, ड्राईवर खुद चलकर देश को चलाता है।

देशव्यापी ड्राईवरों की दुर्दशा और दुःख को ''अग्रवाल मूवर्स ग्रुप'' के चेयरमैन श्री रमेश अग्रवाल जी ने अपनी दूर दृष्टि से अनुभव किया और उनके कल्याणार्थ 'दूदू' (जयपुर) में विश्व के प्रथम और अपने आप में अनोखे ''ए.पी.एम. ड्राईवर सेवा केन्द्र'' का 23 जुलाई 2012 को औपचारिक रूप से उद्घाटन किया । इस पावन अवसर पर ''अग्रवाल मूवर्स ग्रुप'' के वाईस चेयरमैन श्री राजेन्द्र अग्रवाल जी ने विधिवत् शुरूआत करते हुऐ सेवा केन्द्र पर ट्रक लेकर आने वाले ड्राईवर भाईयों का चरण धोकर आदर सत्कार किया । इस अद्भुत और विस्मित करने वाले स्वागत सत्कार से कई ड्राईवर भावुक होकर बिलख कर रो पड़े । राजेन्द्र जी ने प्रेमवश उन्हे अपने गले लगा लिया । ड्राईवर भाईयों ने कहा की जिन्दगी में आज किसी ने पहली बार हमारे पाँव धोए है। हमारे बीवी - बच्चों ने हमें कभी इज्जत प्रदान नहीं कि। हमने तो हमेशा दुसरों को चरण स्पर्श करते हुऐ देखा है।

एक ड्राईवर भाई ने बहुत ही अच्छी बात कही की बचपन में कभी रामलीला में केवट द्वारा भगवान राम के चरण धोते हुऐ देखा था पर राजेन्द्र जी आपने मेरे पाँव धाऐ यह अद्भुत अनुभव है जब राजेन्द्र जी ने बड़ी तार्किक बात कही कि संसार को भगवान चलाते हैं और तुम देश को चलाते हो, इस कारण तुम भगवान के वंशज हो।

अतः जो सम्मान भगवान को मिलता है, उसी के तुम भी हकदार हो। ड्राईवर ने कहा, राजेन्द्र जी आज मेरा जीवन धन्य हो गया, जो आपने हमारे दुःख-दर्द, परेशानी को समझकर आदर दिया, इसे मैं ही नहीं बल्कि पुरी ड्राईवर जमात जीवनपर्यन्त नहीं भूल पायेगी। शीघ्र ही ''अग्रवाल मूवर्स ग्रुप'' की भविष्य में भारत के विभिन्न राजमार्गों पर इसी तरह के और भी ''ड्राईवर सेवा केन्द्र'' खोलने की योजना है।

❖ ❖ ❖

भारत में 540 प्रतिदिन रोड दूर्घटना में मरने का मूल कारण और इसका मूल उपाय

एक वैज्ञानिक सवेक्षण में पाया गया है कि हर व्यक्ति को 06 घण्टे सोना बहुत ही आवश्यक है । मगर दुर्भाग्य से ड्राईवर समुदाय जो राष्ट्रीय राज्यमार्गों पर चलते है उनके लिये यह बिल्कुल असंभव है। गाड़ी खड़ी करके आराम तो कर सकते है मगर सो नहीं सकते है । हर समय उनको डर लगा रहता है कि उनकी गाड़ी से तेल और सामान की चोरी न हो जाये। रास्ते पर जगह-जगह चोरों के समूह मिलते है। इसी डर की वजह से एक ट्रक ड्राईवर 2:00 से 2:30 घण्टे ही सो पाता है वह भी किश्तों में और इस तरह नींद पूरी न होने से अक्सर उनसे सड़क दूर्घटना हो जाती है ।

ए.पी.एम ने इस विषय पर एक अध्यन किया और यह ध्येय बनाया कि एक ट्रक ड्राईवर कम से कम 6:00 घण्टे सुकून से सो सके और यह तभी संभव होगा जब ड्राईवर को यह आश्वासन मिलें की उसके सोने पर उसका ट्रक, सामान एवं तेल सुरक्षित है । अब उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी ए.पी.एम ड्राईवर सेवा केन्द्र के कम्पाउन्ड में तैनात सुरक्षाकर्मी लेंगे। और ड्राईवर को यह आश्वासन देंगें की आपके माल के साथ कुछ होता है तो उसकी भरपाई हम करेंगें।

इससे ट्रक ड्राईवर को भरोसा होगा और वह आराम से 6:00 घण्टे सो पायेगा । एक सर्वेक्षण में यह पता चला है कि प्रतिदिन लगभग 540 व्यक्ति सड़क दुर्घटनाओं से मौत के शिकार होते है। अकेले एक ए.पी.एम ड्राईवर सेवा केन्द्र के कारण हम लोग कम से कम शुरूआत में 3000 ट्रक ड्राईवर और कुछ समय पश्चात् 30,000 ट्रक ड्राईवर को 6:00 घण्टे की पूरी नींद आराम से सुला पायेंगें ।

और जब ट्रक ड्राईवर 6:00 घण्टे की नींद पूरी करेंगें तो सड़क दुर्घटनाओं से मरने वालो की संख्या स्वततः ही कम होती जायेगी। 540 का आंकड़ा कम होकर 500, फिर 400, फिर 300 इत्यादि आयेगा।

❖ ❖ ❖

ड्राईवर हमारी अर्थव्यवस्था का प्रखर प्रहरी है

एक ड्राईवर में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान पैदा करने के लिए इस केन्द्र के दोनों ओर एक किमी. पहले से ही विभिन्न सम्मानजनक अच्छे-अच्छे व प्रेरणादायक स्लोगन बड़े-बड़े बोर्डों पर लिखे गए हैं, जैसे- जैसे– *1. ड्राईवर देश का आन्तरिक सिपाही है, 2. भगवान दुनिया को चलाते हैं, ड्राईवर देश की अर्थव्यवस्था को चलाते हैं, 3. ड्राईवर देश की इकॉनोमी की रक्तचाप है, 4. ड्राईवर सुरक्षित तो व्यापार सुरक्षित, 5. नर सेवा नारायण सेवा, ड्राईवर सेवा देश सेवा, 6. क्या आपको मालूम है, चालक की औसत आयु आम व्यक्ति से 10 वर्ष कम होती है, 7. गाड़ी मैनुफैक्चरिंग करना आसान है, मगर इसको चलाना बहुत मुश्किल है, 8. टाटा/अशोक इसलिए जाने जाते हैं, क्योंकि चालक इनका पहला सिपाही है, इत्यादि।*

इनको पढ़कर ड्राईवर को ऐसा लगेगा कि वह भी देश का एक महत्वपूर्ण व्यक्ति है और उसका समाज में स्थान है।

यह केवल शुरूआत है और इस तरह के अग्रवाल मूवर्स ग्रुप द्वारा आने वाले 6-7 वर्षों में लगभग 10 ड्राईवर सेवा केन्द्र खोलने का विचार है। इसी प्रकार सभी बड़े औद्योगिक घराने इस पहल में एक दिन अवश्य भाग लेंगे। शायद सरकार की भी मंशा बदल जाए और वह खुलकर आगे आए तो एक नया इतिहास बन जाएगा।

रमेश जी और उनके छोटे भाई राजेन्द्र जी ने सहर्ष यह निर्णय लिया है कि जब वे 58 वर्ष के हो जायेंगे, तब प्रति माह इन 'ड्राईवर सेवा केन्द्रों' पर 6-7 दिन बितायेंगे और ड्राईवरों की सभी तरह की सुख-सुविधाओं का पूरा ध्यान रखेंगे। साथ ही, ड्राइवरों को होने वाली अन्य प्रकार की परेशानियों को नजदीक से देखने का भी अवसर मिलेगा, जिससे भविष्य में उनकी सुविधाओं के लिए और भी कारगर प्रयास किये जा सकें।

❖ ❖ ❖

**भगवान दुनियाँ को चलाते है,
ड्राईवर देश की
अर्थव्यवस्था को चलाते है।**

**क्या आपको मालुम है,
ड्राईवर आम व्यक्ति से 10 वर्ष
पहले मर जाता है।**

ड्राईवर सुरक्षित तो
व्यापार सुरक्षित

नर सेवा, नारायण सेवा
ड्राईवर सेवा, देश सेवा

ड्राईवर देश की Economy
की रक्तचाप है।

ड्राईवर देश
का आंतरिक सिपाही है।

नर सेवा, नारायण सेवा,
ड्राईवर सेवा, देश सेवा

Address :-
Seva Gram, Taluka Dudhu, NH-8
Distt. Jaipur, Rajasthan, India
Mob. : 09313963511, 09390379401

Regd. Off :-
Agarwal Movers Group
Plot No.: 1, Wedding Souk,
Opp.: Cresent Public School,
Pitampura, New Delhi-34. (**India**)
Phone : 011 - 4500 4321
Fax : 011 - 4506 3710

AGARWAL™
movers GROUP
AGARWAL PACKERS & MOVERS LTD.

www.apmdriversevakendra.com